टिप्पणी

242hi02

2

राग के तत्त्व

भारतीय समाज में संगीत की अभिव्यक्ति शास्त्रीय एवं लोक, दोनों ही धाराओं के माध्यम से होती है। समस्त शास्त्रीय संगीत का उद्भव लोक संगीत से माना जाता है, जो निश्चित नियमों से बंधने पर शास्त्रीय संगीत का रूप ले लेता है। भारत में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा विविध शैलियों एवं विधाओं से परिपूर्ण है। वह मूलभूत स्वरयुक्त संयोजना जो इन्हें परिभाषित करती है, 'राग' कहलाती है।

राग एवं ताल की अवधारणाएँ संगीत के प्रमुख अवयवों, क्रमशः स्वर एवं लय को अभिव्यक्त करती हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं एवं शैलियों के अंतर्गत यदि ताल वह धरातल है, जिस पर किसी बंदिश की स्थापना होती है, तो राग उस बंदिश की स्वरयुक्त व्याख्या एवं विस्तार का आंतरिक मर्म है। हिन्दुस्तानी संगीत का शास्त्रीय स्वरूप राग के माध्यम से दृढ़ नियमों से जुड़े होने के कारण उजागर होता है, जो संगीत की अन्य धाराओं में दृष्टिगत नहीं होता।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप–

- राग को परिभाषित कर सकेंगे;
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत राग की अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे;
- राग की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे; तथा
- राग के विभिन्न तत्त्वों का उल्लेख कर सकेंगे।

2.1 राग की अवधारणा एवं उसकी परिभाषा

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत मूलतः सुरीला है तथा राग उसका केन्द्रबिंदु है। 'राग' शब्द हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिए पर्याय समान है। राग की अवधारणा लगभग 2000 वर्ष पुरानी है। '**राग**' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु 'रञ्ज' (रंगना, रंजकता प्रदान करना) से मानी जाती है। व्युत्पत्ति के आधार पर इसे 'रञ्जयति इति

टिप्पणी

राग:,' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, अर्थात् वह जो रंजकता प्रदान करे, वह **राग** है।

राग को सांगीतिक स्वरों के उस स्वरानुक्रम विन्यास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका सुनिश्चित गुणधर्म होता है तथा जो विशेष नियमों के द्वारा संचालित है। अपने वास्तविक अर्थ में **राग** का सर्वप्रथम उल्लेख **मतंग** द्वारा रचित ग्रंथ **'बृहद्देशी'** लगभग 8वीं शताब्दी में हुआ है।

समय के साथ **राग** में कई बदलाव आये हैं, परन्तु उसकी मूल विशेषताएँ कभी भी विवादास्पद नहीं रहीं। **राग** के लिए प्रमुख आवश्यकता होती है श्रोता का मनोरंजन करना। **राग** केवल एक सांगीतिक सप्तक नहीं, अपितु एक विशिष्ट स्वरों की व्यवस्था है, जिसकी संपूर्ण सक्षमता एवं जटिलता उसके प्रस्तुतिकरण से ही ज्ञात हो सकती है। यद्यपि राग को प्रस्तुत करने के लिये एक संगीतज्ञ को यथोचित स्वतंत्रता रहती है, परन्तु कुछ मूल नियमों एवं विशेषताओं का परिपालन वांछनीय है। राग की ये विशेषताएँ भारत के महान संगीतविदों के द्वारा सौंपी गई हैं तथा आज भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रयोगधर्मी कलाकार इनका अनुसरण करते हैं। ये निम्न रूप से हैं:-

- रागों की उत्पत्ति ठाठों से होती है।
- राग में षड्ज (सा) वर्जित नहीं होता है।
- राग के अंतर्गत मध्यम तथा पंचम एक साथ वर्जित नहीं होते हैं।
- राग के अंतर्गत आरोही तथा अवरोही स्वरों का सुनिश्चित समुच्चय होना चाहिए।
- राग में वादी, संवादी तथा अनुवादी स्वर होने चाहिए।
- राग में कम-से-कम पाँच स्वर होने चाहिए (एक या दो स्वर वर्जित हो सकते हैं)।
- हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के लिए दिन के भिन्न प्रहर तथा भिन्न ऋतुए निर्धारित हैं।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. **'राग'** शब्द की व्युत्पत्ति जिस संस्कृत धातु से हुई है, उसका नाम बताइए।
2. किसी **राग** के लिये प्रमुख आवश्यकता क्या होती है?
3. ठाठ की क्या उपयोगिता है?
4. **राग** में कौन-सा स्वर वर्जित नहीं होता है?
5. **राग** के अंतर्गत कौन-से दो स्वर एक साथ वर्जित नहीं होते हैं?

टिप्पणी

2.2 राग के तत्त्व

2.2.1 ठाठ

सप्तक के अंतर्गत सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वर होते हैं। इन बारह (सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वर) स्वरों में से सात चयन किये गये स्वरों का समुच्चय **ठाठ** बनता है। अन्य शब्दों में, आरोहात्मक क्रम से व्यवस्थित सात स्वरों का सांगीतिक सप्तक **ठाठ** कहलाता है परन्तु, यह सांगीतिक विन्यास का केवल एक ढाँचा होता है जिसका प्रयोजन गायन नहीं है। ठाठ से ही रागों की उत्पत्ति होती है।

विख्यात संगीतविद पं. विष्णु नारायण भातखंडे (1860-1936) के अनुसार दस ठाठ हैं, यथा-**बिलावल, कल्याण, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी** तथा **तोड़ी**।

2.2.2 राग जाति

राग में प्रयुक्त स्वरों की संख्या के आधार पर तीन प्रकार की जातियाँ होती हैं:-

1. **संपूर्ण** - जिस राग में आरोह तथा अवरोह में सात स्वरों का प्रयोग होता है, वह संपूर्ण कहलाती है।
2. **षाडव** - जिस राग में आरोह तथा अवरोह में छह स्वरों का प्रयोग होता है, वह षाडव कहलाती है।
3. **औडव** - जिस राग में आरोह तथा अवरोह में पाँच स्वरों का प्रयोग होता है, वह औडव कहलाती है।

ये मुख्य जातियाँ आपसी विनिमय तथा संयोजन के पश्चात् छह अन्य जातियों को जन्म देती हैं, यथा

1. **संपूर्ण - षाडव** - जिस राग के आरोह में सात तथा अवरोह में छह स्वर होते हैं, वह संपूर्ण - षाडव कहलाती है।
2. **संपूर्ण - औडव** - जिस राग के आरोह में सात तथा अवरोह में पाँच स्वर होते हैं, वह संपूर्ण-औडव कहलाती है।
3. **षाडव - संपूर्ण** - जिस राग के आरोह में छह तथा अवरोह में सात स्वर होते हैं, वह षाडव - संपूर्ण कहलाती है।
4. **षाडव - औडव** - जिस राग के आरोह में छह तथा अवरोह में पाँच स्वर होते हैं, वह षाडव-औडव कहलाती है।

टिप्पणी

5. **औडव - संपूर्ण** - जिस राग के आरोह में पाँच तथा अवरोह में सात स्वर होते हैं, वह औडव - संपूर्ण कहलाती है।

6. **औडव - षाडव** - जिस राग के आरोह में पाँच तथा अवरोह में छह स्वर होते हैं, वह औडव-षाडव कहलाती है।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. **ठाठ** किसे कहते हैं?
2. **ठाठ** से किसकी उत्पत्ति होती है?
3. भातखंडे के अनुसार **ठाठ** कितने हैं?
4. **संपूर्ण** जाति राग में स्वरों की संख्या तथा व्यवस्था क्या है?
5. **औडव - संपूर्ण** जाति राग में स्वरों की संख्या तथा व्यवस्था क्या है?

2.2.3 आरोह

चढ़ते हुए क्रम में स्वरों का समुच्चय **आरोह** कहलाता है, यथा

राग भूपाली का आरोह - **सा रे ग प ध सां**

2.2.4 अवरोह

उतरते हुए क्रम में स्वरों का समुच्चय अवरोह कहलाता है, यथा

राग भूपाली का अवरोह - **सां ध प ग रे सा**

राग के आरोह तथा अवरोह के माध्यम से राग के गायन में प्रयुक्त स्वरों का अनुक्रम ज्ञात होता है। निम्न उदाहरणों के द्वारा यह समझा जा सकता है:-

राग अल्हैया बिलावल का आरोह-

सा रे ग प ध नि सां

ऊपर दिये गये स्वरों के क्रम से स्पष्ट होता है कि राग अल्हैया बिलावल में आरोह में 'म' वर्जित होता है।

राग अल्हैया बिलावल का अवरोह-

सां नि ध प ध <u>नि</u> ध प म ग म रे सा

टिप्पणी

ऊपर दिये गये स्वरों का समुच्चय राग अल्हैया बिलावल का उतरता क्रम दर्शाना है।

2.2.5 पकड़

प्रत्येक राग के लिये निजी रूप से स्वरों का एक सुनिश्चित अनुक्रम जिसके द्वारा श्रोता राग को तुरन्त पहचान सके, पकड़ कहलाता है। अंग्रेजी में इसका अनुवाद 'कैच फ्रेज' के रूप में हो सकता है। उदाहरण के लिये, राग यमन की पकड़ है – **नि़ रे ग रे सा, प मं ग रे सा**

2.2.6 वादी स्वर

राग का सबसे प्रमुख स्वर वादी स्वर कहलाता है। राग में इसका स्थान अपने दरबार में राजा के समान ही महत्त्वपूर्ण होता है। इसे 'जीव स्वर' भी कहा जाता है। अन्य शब्दों में, यह राग का सबसे महत्त्वपूर्ण अवयव होता है। यह राग को गुणधर्म प्रदान करता है। राग के प्रस्तुतिकरण में स्वर समूहों में यह स्वर सर्वाधिक प्रयुक्त अथवा प्रदर्शित होता है। उदाहरण के रूप में, राग यमन का वादी स्वर '**ग**' है।

2.2.7 संवादी स्वर

वादी के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर संवादी स्वर कहलाता है। वादी तथा संवादी स्वरों के बीच का अंतराल चार अथवा पाँच स्वरों का होता है, उदाहरण के लिये, राग यमन का संवादी स्वर '**नि**' है।

2.2.8 अनुवादी स्वर

वादी तथा संवादी स्वरों के अतिरिक्त राग के अन्य सभी स्वर अनुवादी, अर्थात् जो (वादी तथा संवादी का) अनुगमन करते हैं, कहलाते हैं। यद्यपि राग में इनकी भूमिका वादी तथा संवादी स्वरों का अनुगमन करना है, अनुवादी स्वरों का राग में अपना अलग महत्त्व है। राग के प्रस्तुतिकरण में ये स्वर भिन्न प्रकार के विनिमय तथा संयोजन के द्वारा तत्क्षण निर्माण में मदद करते हैं। राग यमन में **सा, रे, मं, प** तथा **ध** अनुवादी स्वर हैं।

2.2.9 विवादी स्वर

विवादी स्वर वे स्वर होते हैं जो किसी राग में सामान्य स्वरों की भांति प्रयुक्त नहीं किये जाते, अपितु स्वरों के कुछ संयोजनों में सम्मिलित कर दिये जाते हैं। राग के सौंदर्य में

टिप्पणी

वृद्धि करने हेतु विवादी स्वरों का प्रयोग न्यून रूप से होता है। विवादी स्वर का अधिक प्रयोग राग का गुणधर्म बदल सकता है। उदाहरण के लिये, राग बिहाग के दिये गये स्वर समूह में तीव्र 'म॑' विवादी स्वर के रूप में प्रयुक्त है, यथा – **'म॑' प ग म ग**

2.2.10 समय

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की एक निजी विशेषता है– रागों के लिये ऋतु तथा समय का निर्धारित होना। भिन्न-भिन्न रागों के गायन के लिये रात तथा दिन को आठ भागों में विभाजित करके राग समय या कालावधि सुनिश्चित किये गये हैं। इन्हें **'प्रहर'** कहा जाता है। प्रत्येक की तीन घंटों की अवधि से युक्त दिन तथा रात के चार-चार प्रहर होते हैं जिनमें स्वरों के तीन वर्ग बनाकर रागों का वर्गीकरण किया जाता है (1) रेध शुद्ध युक्त राग, (2) रेध कोमल युक्त राग, (3) गनी कोमल युक्त राग

पाठगत प्रश्न 2.3

1. **'आरोह'** शब्द को परिभाषित कीजिये।
2. **'पकड़'** का क्या अर्थ है?
3. **राग** के सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर का उल्लेख कीजिये।
4. **वादी** तथा **संवादी स्वरों** के बीच का अंतराल क्या होता है?
5. **अनुवादी स्वरों** से आप क्या समझते हैं?

आपने क्या सीखा

राग की अवधारणा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की निजी विशेषता है तथा लगभग 2000 वर्ष पुरानी है। राग शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'रंज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है रंगना अथवा रंजकता प्रदान करना।

राग को सांगीतिक स्वरों के उस स्वरानुक्रम विन्यास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका सुनिश्चित गुणधर्म है तथा जो विशेष नियमों के द्वारा संचालित है। अपने वास्तविक अर्थ में राग का सर्व प्रथम उल्लेख **मतंग** द्वारा रचित ग्रंथ **'बृहद्देशी'** में हुआ है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्राचीनतम अवयवों में से एक इसमें समय

टिप्पणी

के साथ कई परिवर्तन आये हैं, परन्तु इसकी मूल विशेषतायें कभी भी विवादास्पद नहीं रही हैं। राग की प्रमुख आवश्यकता श्रोताओं को मनोरंजन प्रदान करना है। राग के तत्त्व हैं. **ठाठ, राग जाति, आरोह, अवरोह, पकड़ वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर** तथा **समय**।

पाठांत प्रश्न

1. '**राग**' शब्द से आप क्या समझते हैं?
2. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में '**राग**' की अवधारणा के विषय में विस्तारपूर्वक लिखें।
3. **राग** के निर्माण में किन नियमों का प्रयोग होता है?
4. **राग** के मुख्य तत्त्व कौन-कौन से हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. रञ्ज्।
2. श्रोताओं को मनोरंजन प्रदान करना।
3. रागों की उत्पत्ति ठाठों से होती है।
4. षड्ज।
5. मध्यम तथा पंचम।

2.2

1. आरोहात्मक क्रम से व्यवस्थित सात स्वरों का सांगीतिक सप्तक ठाठ कहलाता है।

टिप्पणी

2. ठाठ से ही रागों की उत्पत्ति होती है।

3. दस।

4. सात स्वर चढ़ते क्रम में तथा सात उतरते क्रम में।

5. पाँच स्वर चढ़ते क्रम में तथा सात उतरते क्रम में।

2.3

1. चढ़ते हुए क्रम में स्वरों का समुच्चय आरोह कहलाता है।

2. प्रत्येक राग के लिये निजी रूप से स्वरों का एक सुनिश्चित अनुक्रम **पकड़** कहलाता है।

3. वादी।

4. वादी तथा संवादी स्वरों के बीच का अंतराल चार अथवा पाँच स्वरों का होता है।

5. वादी तथा संवादी स्वरों के अतिरिक्त राग के अन्य सभी स्वर अनुवादी, अर्थात् जो (वादी और संवादी का) अनुगमन करते हैं, कहलाते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली

राग – स्वर और वर्ण से विभूषित नियमबद्ध रचना जो मनुष्यों के मन का रंजन करे, राग कहलाती है।

आरोह – चढ़ते हुए क्रम में स्वरों का समुच्चय **आरोह** कहलाता है।

अवरोह – उतरते हुए क्रम में स्वरों का समुच्चय **अवरोह** कहलाता है।

पकड़ – प्रत्येक राग के लिए निजी रूप से स्वरों का एक सुनिश्चित अनुक्रम **पकड़** कहलाता है।

वादी स्वर – राग का सबसे प्रमुख स्वर वादी स्वर कहलाता है।

टिप्पणी

संवादी स्वर – वादी स्वर के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर संवादी कहलाता है।

अनुवादी स्वर – वादी तथा संवादी स्वरों के अतिरिक्त राग के अन्य सभी स्वर अनुवादी कहलाते हैं।

उपयोगी गतिविधियाँ

1. विभिन्न विख्यात कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत निर्धारित रागों को सुनें।
2. पं. विष्णु नारायण भातखंडे के द्वारा रचित क्रमिक पुस्तक तालिका भाग I तथा II का अध्ययन कीजिए।